Shri T. T. Krishnamachari: Sir, the translation, I think, has not been good; because I am sure that the hon. Member speaks so clearly, and it is not correctly translated. But, nevertheless, I would like to say this. There is a lot of exaggeration regarding the amount of money that goes abroad. I have been told—I think one hon. Member said here in the last session—that hundreds of crores have gone. If hundreds of crores of money has been withdrawn from circulation, we would see the effect of it.

That certain amounts are going, the evidence for that is provided by the fact that we seize the money, Indian currency, being taken by a few people who are going abroad. A constant watch is being kept on this kind of thing. But the evader is always there, and he has always got ways of evading. But I can give the hon. Member this assurance, that the amounts that are mentioned in the newspapers and other places are considerably exaggerated.

Delhi Water Supply

+

*94. **Shri Surendra Pal Singh:**
Shri Bibhuti Mishra:
Shri K. N. Tiwary:
Shri Yashpal Singh:
Shri A. N. Vidyalankar:
Shri Rameshwar Tantia:
Shri M. L. Dwivedi:
Shri S. C. Samanta:
Shri Subodh Hansda:
Shri P. C. Borooah:
Shri R. S. Pandey:
Shrimati Savitri Nigam:
Shri Onkar Lal Berwa:
Shri S. M. Banerjee:
Shri Hukam Chand Kachhavaiya:
Shri Bade:
Shri Brij Raj Singh:
Shri Naval Prabhakar:
Shri Hem Raj:
Shri P. R. Chakraverti:
Shri Heda:
Shri Basappa:
Shri Karni Singhji:
Maharajkumar Vijaya Ananda:
Shri Shree Narayan Das:

Will the Minister of **Health** be pleased to state:

(a) whether it is a fact that during the months of May and June this year, there was a major breakdown in the water supply in the Capital;

(b) if so, the causes of the shortage;

(c) the immediate steps taken by the authorities at the time of the crisis to alleviate the sufferings of the people; and

(d) the long-range measures which Government propose to take to meet the problem of water shortage in Delhi?

The Deputy Minister in the Ministry of Health (Shri P. S. Naskar): (a) No, Sir. Shortage of water was, however, experienced in June, 1965 in certain areas in South and West Delhi.

(b) The main cause of the shortage is the marked increase in the demand of water due to phenomenal increase in the population of Delhi and peak load demands of the summer season. The shortage was temporarily accentuated on the 2nd and 3rd June, 1965 due to a leak in one of the raw water conduits.

(c) The work for the repair of the leak was taken in hand by the Delhi Municipal Corporation immediately as the leak was noticed on 2nd June, 1965 and completed by 4 a.m. on the next day. During this time, the water supply hours were restricted and water tankers were sent to the affected areas to meet the local shortages. Normal water supply was restored on the 4th June, 1965.

(d) A statement is laid on the Table of the Sabha. [*Placed in Library, see* No. LT-4565/65].

Shri Surendra Pal Singh: Is it a fact that in the beginning of May, whatever quantity of raw water was required by the Delhi authorities from the Punjab Government, the same quantity was released in the Jammuna almost immediately and it was considered by the experts at that time that the quantity was sufficient for the capital's needs, and, if so, may we know why this extreme shortage of water took place subsequent to that?

Shri P. S. Naskar: I have already answered that on 2nd and 3rd June, there was some leak in one of the main pipes near the Wazirabad headworks. That is why in certain parts of Delhi the supply was stopped for the repair of that leak. Only on these two days there were difficulties in certain areas and we restricted the supply. Later on normal supply was restored.

Shri Surendra Pal Singh: In regard to the two schemes of water augmentation mentioned on page 2 of the statement—the tubewell scheme and the combined water-supply for Ghaziabad and Shahdara area—may I now if it is a fact that whereas the Delhi Development Authority and the State Governments concerned are very keen to implement these two schemes, the Delhi Corporation is opposing it tooth and nail? May I know the grounds on which the Corporation is opposing these two schemes?

The Minister of Health (Dr. Sushila Nayar): We are not aware of any opposition to these schemes; they are still in a tentative stage. They are being discussed and they have not been finalised. That is why they cannot be taken up at this stage.

Shri Surendra Pal Singh: Is the Corporation opposing them or not?

Dr. Sushila Nayar: The question of opposition will arise when the schemes take some definite form. At present, they are too nebulous for anyone to oppose them.

श्री विभूति मिश्र : अध्यक्ष जी, सन् 1952 से आप यहां के मेम्बर हैं और हम भी सन् 52 से मेम्बर हैं । प्राय: हर साल देखा जाता है कि दिल्ली में पानी की कमी हो जाती है । पानी मनुष्य के लिए खाने से भी ज्यादा जरूरी चीज है । और शहरों में देखा जाता है कि जमीन को खोद कर पानी निकाला जाता है, लेकिन दिल्ली में सरकार केवल जमुना पर ही निर्भर रहती है । क्या सरकार के पास कोई ऐसी योजना है कि जमीन खोद कर पानी निकाला जावे । दिल्ली में काफी अंडर ग्राउंड वाटर निकाल कर फेंका जाता है, क्या उसको साफ करके पीने के लिए देने का कोई इन्तिजाम नहीं हो सकता ? मंत्री जी तो गांधी जी के साथ रह चुकी हैं, उनके मन में तो और ज्यादा दया की भावना होनी चाहिए ।

डा० सुशीला नायर : श्रीमान्, दिल्ली में पानी की कमी है यह बात दुरुस्त है । उसको काफी साल ब साल बढ़ाया भी गया, लेकिन जितनी जरूरत है उतना पानी नहीं पहुंचा सके हैं यह बात बिल्कुल दुरुस्त है । अब माननीय सदस्य जमीन से पानी निकालने का सुझाव दे रहे हैं । शायद उनको मालूम होगा कि इस वक्त हम 6 मिलियन गैलन पानी जमीन के अन्दर से निकाल कर दे रहे हैं । लेकिन सब जगह जमीन के अन्दर का पानी पीने के लायक नहीं समझा जाता । कई जगह पानी खारा भी है । जहां तक मिल सकता है वहां तक....

श्री रामेश्वरानन्द : अध्यक्ष जी, मेरा एक व्यवस्था का सवाल है ।

अध्यक्ष महोदय : इस में व्यवस्था कैसे आ गयी । आप बैठ जाइए, उनका जवाब तो सुन लीजिए ।

डा० सुशीला नायर : श्रीमान् मैं ने एक विशेषज्ञ को भी बुलाया था यह पता लगाने के लिए कि भूगर्भ से कहां पानी मिल सकता है । उन्होंने भी उस के बारे में कुछ सलाह मशविरा दिया है, और हम ने एक फ्रेंच स्पेशलिस्ट से

भी इस के बारे में बात चीत की है । जहां जमीन के अन्दर पानी मिल सकता है वहां हम जरूर लेते हैं ।

अध्यक्ष महोदय : स्वामी जी, आप का क्या व्यवस्था का प्रश्न है ?

श्री रामेश्वरानन्द : मेरा कहना यह है कि आपके और अंग्रेजों के शासन से पहले दिल्ली में कुंवें थे और बहुत अच्छा पानी निकलता था और अब भी निकलता है, नलकों से पानी निकलता है । लेकिन यहां ऐसा उत्तर दिया जाता है कि दिल्ली में जमीन के अन्दर का पानी पीने के लायक नहीं है । यदि माननीय मंत्री महोदया चाहें तो यहां से हजारों मन पानी पीने के लिए मैं उन की कोठी पर भिजवा सकता हूं । यहां पर ऐसा असत उत्तर दिया जाता है, वह न दिया जाए, यही मेरा व्यवस्था का प्रश्न है ।

अध्यक्ष महोदय : आपने उनका सारा उत्तर सुना नहीं था । अगर सुनते तो शायद आपको यह प्रश्न करने की जरूरत न होती । उन्होंने कहा कि पानी के लिए ट्यूब वैल लगाए हुए हैं, उन से पानी निकाल कर दिया जा रहा है । कहीं कहीं ऐसा पानी है, जो पीने के इस्तैमाल में आ सकता है और कुछ जगह का पानी ऐसा है जो पीने के इस्तैमाल में नहीं आ सकता । मेरे दरवाजे के सामने भी ऐसा एक ट्यूब वैल है, वार्क उसका पानी पीने के लायक नहीं है । सवाल यह है कि क्या उसको किसी तरह प्रासेस करके पीने के काबिल बनाया जा सकता है । इसमें व्यवस्था का प्रश्न कहां आता है । आप गलती में है ।

श्री रामेश्वरानन्द : पानी दिल्ली में है, अब भी वह पानी पिया जाता है, नलकों में बहुत अच्छा पानी आता है । हम अभी भी सीताराम बाजार आर्य समाज से वह पानी पीकर आ रहे हैं । आपकी कोठी के सामने का पानी खराब हो सकता है । लेकिन जहां अच्छा है वहां से तो निकाला जा सकता है ।

Shri Basappa: Is it a fact that there is a lot of misuse of drinking water for gardening purposes; if so, may I know the extent of it and what steps have been taken to prevent such misuse?

Dr. Sushila Nayar: I believe no substantial amount of drinking water is used for gardening, for the simple reason that it is very expensive to do so. If there are certain areas where it may be used, efforts are being made to check it and the Housing Ministry is also looking into it.

मैं स्वामी जी से भी निवेदन कर दूं कि 60 लाख गैलन रोज का पानी हम नल से निकाल कर पीने के वास्ते दे रहे हैं । कहीं, कहीं अच्छा पानी है यह हम जानते हैं ।

अध्यक्ष महोदय : जहां वह खराब पानी है एक दफे मुझे भी ख्याल आया कि गार्डिनिंग को अनफिल्टर्ड वाटर नहीं मिलता और वह खराब पानी फिर जमुना में भेजा जा रहा है तो वह पानी क्यों नहीं बचायें क्योंकि पीने के लिए नहीं तो कम से कम उन को गार्डिनिंग के लिए तो मिल सकता है ।

डा० सुशीला नायर : यह जो सुझाव आप ने दिया है यह सुझाव हम ने भी इन विशेषज्ञों के सामने रक्खा है और अभी जो बाहर से भी विशेषज्ञ आये थे उन के साथ भी यह सलाह मशविरा हुआ । यह भी एक आइटम है जिस पर विचार किया जायगा ।

श्री यशपाल सिंह : यह बाहर से जो विशेषज्ञ आये थे, डाक्टर टेलर उन्हों ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि मुझे आश्चर्य है कि दिल्ली राजधानी के लोग किस प्रकार से अपनी जिंदगी चला रहे हैं जब कि न कोई लेबोरेटरी का इंतजाम है, न कोई ऐसा इंतजाम है कि पानी को अच्छे तरीके से साफ रक्खा जा सके और जब तक गंदा पानी साफ व मीठे पानी में मिल कर लोगों की तंदुरुस्ती

को खराब करता रहता है तो मैं जानना चाहता हूं कि डाक्टर टेलर की रिपोर्ट पर सरकार ने क्या ऐक्शन लिया है ?

डा० सुशीला नायर : श्रीमान्, माननीय सदस्य ने रिपोर्ट को या तो पूरा पढ़ा नहीं है या उस के समझने में उन्हें कुछ फर्क हुआ है । डाक्टर टेलर ने यह लिखा है कि जमुना के पानी में यह पोल्यूशन आ जाता है खास कर बरसात के मौसम में लेकिन जहां तक पीने के पानी का सवाल है वह ठीक से शुद्ध कर के तैयार कर के भेजा जाता है और युनिफार्मली सारे समय उसकी क्वालिटी ठीक रही है । इस के अलावा उन्होंने लेबोरेटरी वगैरह बढ़ाने की सलाह दी है, उस पर विचार हो रहा है ।

श्री यशपाल सिंह : क्या कोई बढ़ायी गयी है ?

Shri S. M. Banerjee: In his first reply the Deputy Minister stated that there was shortage of water in the month of June 1965. I want to know whether his attention has been drawn to the acute shortage of water in South Delhi, especially in Vinaynagar and other places, where water is not available even for an hour. I would like to know what steps have been taken to have improvement there.

Dr. Sushila Nayar: No, Sir; there was some complaint earlier.

Shri S. M. Banerjee: Even today there is complaint.

Dr. Sushila Nayar: With improvement in presure in different parts, the situation has been considerably relieved.

श्री क० ना० तिवारी : प्रैशर में कमी हो ने की वजह से पानी बहुत जगहों में नहीं पहुंच रहा है तो मैं जानना चाहता हूं कि इस प्रैशर को ठीक रखने के लिए क्या इंतजाम किया जा रहा है ?

डा० सुशीला नायर : श्रीमन्, इस के लिये भी कुछ बूस्टर पम्प लगाये गये हैं और उस के उपरान्त कुछ नये रिजरवायर्स और नई लाइनें डालने की योजना बन रही है जिस से कि डिस्ट्रिब्यूशन में ज्यादा सहूलियत हो जाय ।

Dr. L. M. Singhvi: I would like to know as to what is being done to increase and improve the pressure throughout the duration of the availability of water. The difficulty is that pressure of water is not enough and the duration is very short in various parts of Delhi. I would like to know what is being done to improve the situation.

Dr. Sushila Nayar: I have already given the answer to that.

Shri A. N. Vidyalankar: With reference to the answer to part (a) of the question, may I know how the Government has ascertained the facts and whether the statement regarding the extent of the trouble and duration of the trouble is not an under-statement?

Dr. Sushila Nayar: No, Sir. My hon. colleague has given the exact timings. On the 2nd June in the early morning at about 1.30 or 2.30 a.m. the leak was detected. Immediately the staff went there. When the water level receded they started the repair work, which was completed by 4 a.m. on the 3rd. Water was released on a limited scale,—instead of 4 cft. it was 2 cft.—on the 3rd. On the 4th the supply became normal.

श्री नवल प्रभाकर : पश्चिमी दिल्ली के लिए कहा गया कि पीने के पानी की सप्लाई ठीक है । मैं पश्चिमी दिल्ली में रहता हूं और पीने के पानी की अवस्था वहां पर यह है कि पानी की सप्लाई के घंटे काफी कम कर दिये गये हैं लेकिन फिर भी नलों में पानी नहीं आता है तो उस का क्या कारण है ?

Shri P. S. Naskar: It is a fact that water supply is not up to expectations in West Delhi in sumer months. But I would appeal to the hon. Member to see that water is not wasted

in the public hydrants. It looks as if it is nobody's business to close the public tap and water continually flows and is wasted. I would appeal to the hon. Member to ensure that at least in his area this does not happen.

श्री हुकम चन्द कछवाय : शायद मंत्री महोदय को पता होगा कि अभी हाल ही में दिल्ली में जनसंघ का एक बहुत बड़ा प्रदर्शन हुआ था। उस की एक महीने पहले सूचना थी कि इतने अधिक लोग दिल्ली में उस अवसर पर आने वाले हैं लेकिन 16 तारीख के रोज लोगों को पानी की काफी कठिनाई हुई, काफी लोगों को पानी नहीं मिला तो यह जो लापरवाही हुई उस का क्या कारण है ? यहां से लोग गलत असर ले कर गये कि दिल्ली में पानी पीने के लिए नहीं मिलता। जब सब को पता था कि इतने अधिक लोग दिल्ली में बाहर से आने वाले हैं तो उन के पीने के पानी की व्यवस्था ठीक रक्खी जानी चाहिए थी मैं जानना चाहता हूं कि क्या ऐसी कोई व्यवस्था सम्बद्ध अधिकारियों द्वारा की गई थी ?

डा० सुशीला नायर : जिस पार्टी ने यह डिमांसट्रेशन अरेंज किया था उस को अपने साथ थोड़े से टैंकर्स भी ले आने चाहिए थे।

श्री हुकम चन्द कछवाय : मेरी समझ में उत्तर साफ नहीं आया।

अध्यक्ष महोदय : आप को इंतजाम पहले उन से मिल कर कर लेना चाहिए था।

श्री हुकम चन्द कछवाय : खुफिया रिपोर्ट थी कि इतने लोग बाहर से दिल्ली में इस अवसर पर आने वाले हैं सरकार का कर्तव्य था कि वह पानी का उन के लिए माकूल इंतजाम करती। जो मंत्री जी ने उत्तर दिया वह कोई उत्तर नहीं है।

Shri Karni Singhji: In view of the rapid expansion of Delhi, may I know why Government does not propose ensuring adequate water suplies before new townships are allowed to spring up?

Dr. Sushila Nayar: It is being done. Efforts are also being made to co-ordinate water supply with the coming in to existence of new colonies. As the Deputy Minister has stated, there has been some talk on a joint scheme for Gaziabad and certain parts of Delhi. All this is being taken into consideration.

श्री तुलशीदास जाधव : दिल्ली शहर की बढ़ती आबादी को ख्याल में रखते हुए और यह देखते हुए कि कभी तो बिजली फेल होती है और कभी पानी की कमी पड़ती है क्या सरकार ने कोई ऐसी दीर्घकालीन योजना तैयार की है जिस से कि दिल्ली शहर के लिए उचित व्यवस्था हो सके ?

डा० सुशीला नायर : जी हां। लम्बे काल की योजना बनाई गई है। और जो कि इस स्टेटमेंट में ही बताई हुई है।

Special Audit Report on Orissa Government transactions

+

*95. { **Shri Hari Vishnu Kamath:**
Shri C. K. Bhattacharyya:

Will the Minister of **Finance** be pleased to refer to the reply given to Starred Question Nos. 968 and 987 on 22nd April, 1965 regarding the special Audit Report on the transactions between the Orissa Government and the Orissa Agents, Kalinga Tubes and Kalinga Industries and state:

(a) whether the Audit Reports within the meaning of Article 151(2) of the Constitution have been transmitted to the Governor of Orissa for being laid before the State Legislature;

(b) if so, when they have been so laid;

(c) if not, the reasons for the delay; and